IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 8, Issue 1, August 2019

fgnh dk0; e Lokeh vNrkun dk Loj(vfHk0;fDr vkj Lohdfr dk i'u

Mk je'k ;kno
असि0 प्रोफेसर – हिंदी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कैराना शामली

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने दलित जीवन को , उसकी वेदना ,संत्रास ,स्वप्न और आकांक्षाओं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। स्वाध्ययन से वे अपने समाज के अतीत से वाकिफ हुए , वर्तमान का विश्लेषण कर सके और भविष्य के लिए सपने बुन सके। उनकी सर्जना और कविता एक व्यापक आंदोलन में शामिल रही। वह स्वयं आंदोलन के भाव से निर्मित हुई और आंदोलन को बढाती–फैलाती भी रही। इस आंदोलन का उद्देश्य दलित जीवन को स्वतंत्रता , समानता और बंधुत्व की भूमि उपलब्ध कराना ताकि वे अपनी मानवीय गरिमा और अपने अधिकारों को हासिल कर सकें। यह आश्चर्य का विषय है कि उस समय छायावादी कविता कल्पना के लोक में विचरण कर रही थी। निराला जैसे क्रांतिकारी कवि मानवीय सम्बन्धों में आधुनिक मूल्यों की हिमायत करते है – ‘तुम करो व्याह तोडता नियम ,मै सामाजिक योग में प्रथम ‘’ । लेकिन जमीनी स्तर पर यह विद्रोह कभी साकार नहीं हो पाया , एक व्यक्तिगत विद्रोह ही रहा । वहीं अछूतानंद हरिहर ने अपने विद्रोह को सामाजिक धरातल पर उतारा और एक आंदोलन का रूप दिया । उनकी कविता में कल्पना की भव्यता भले नहीं है लेकिन खेत खलिहान , पसीना और कोडे की मार का दर्द मौजूद है। इसलिए हरिहर की कविता उन पहलुओं को उजागर करती है , जो भव्य छायावादी दौर में छूट गए थे। केवल दलित कविता ही नहीं मुख्य धारा की कविता का फलक भी इन दोनों कवियों के बिना अधूरा है , जिस प्रकार सामाजिक मुक्ति के बिना राजनैतिक मुक्ति का उद्देश्य ।

इस शोध के केन्द्रीय बिन्दु है–

- बींसवी सदी के आरंभ में दलित जीवन
- दलित आंदोलन की परिस्थतियां
- आरंभिक दलित अभिव्यक्ति और उसकी बारीकियॉ
- दलित जीवन की भाषा और उसके चरित्रों का सही संदर्भ

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in